इकाई : ३

हिन्द चीन में राष्ट्रवादी आन्दोलन

दक्षिण पूर्व एशिया में हिन्दचीन देशो से अभिप्राय तत्कालिन समय में लगभग 3 लाख (2. 80 लाख) वर्ग कि०मी० में फैले उस प्रायद्वीपीय क्षेत्र से है जिसमें आज के वियतनाम, लाओस और कम्बोडिया के क्षेत्र आते है। इनकी उत्तरी सीमा मयनमार एवं चीन को छूती है तो दक्षिण में चीन सागर है और पश्चिम में मयनमार के क्षेत्र पड़ते है।

चित्र - हिन्द-चीन का मानचित्र

प्राचीन काल से ही वियतनाम के तोंकिन एवं अन्नाम में चीन का प्रभाव था, और दोनो प्रांत कई शताब्दियों तक चीन के करद राज्य थे। वस्तुतः जब चीन में कोई शक्तिशाली शासक होता था, तब इन प्रांतो को अपने कब्जे मे ले लेता था एवं चीन की केन्द्रीय सत्ता के कमजोर पड़ते ही ये क्षेत्र स्वतंत्र हो जाते थे। यद्यपि चीनी प्रभुत्व के बावजूद भी इस क्षेत्र के लोग ने अपनी अलग सांस्कृतिक पहचान के साथ-साथ भाषा लिपि का भी विकास किया था। बौद्ध धर्म के साथ-साथ कंफ्यूशियस के दर्शन का भी पूरा प्रभाव उन क्षेत्रो पर था।

3, री शताब्दी में शी-हुआंग टी का प्रभुत्व उसके बाद हान वंशीय राजा बू-ती ने पूनः इन क्षेत्रो पर कब्जा किया। फिर 15 वी शता0 में मिंग वंशी सम्राट के युंग ली ने अधिकार किया था। 19 वीं शताब्दी में यह क्षेत्र मंचु शासन के अधिन था।

अंकोरवाट का मन्दिर

दूसरी तरफ लाओस-कम्बोडिया पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव था। चौथी शताब्दी में कम्बुज राज्य की स्थापना हुई थी जहाँ का शासक भारतवंशीय था। कम्बुज भारतीय संस्कृति का प्रधान केन्द्र बना। 12 वी शतब्दी में राज सुर्यवर्मा द्वितीय ने अंकोर मंदिर का निर्माण करवाया था,

परन्तु 16 वी शताब्दी में कंबुज का पतन हो गया था और मध्यकाल में अंतरिक संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी।

इस प्रकार इस क्षेत्र के कुछ देशों पर चीन एवं कुछ पर हिन्दुस्तान के सांस्कृतिक प्रभाव के कारण ही यह हिन्दी चीन के नाम से जाना गया।

व्यापारिक कंपनियो का आगमन और फ्रांसीसी प्रभुत्व :

1498 ई० में वास्कोडिगामा ने भारत से जुड़ने की चाह में जब समुद्री मार्ग ढूंढ निकाला तब पूर्तगाली ही पहले व्यापारी थे, जो भारत के साथ-साथ दक्षिणी पूर्वी एशियायी देशो से जुडे थे और 1510 ई० में मल्लका को व्यापारिक केन्द्र बना कर हिन्द चीनी देशो के साथ व्यापार शुरू किया था। उसके बाद स्पेन डच, इंग्लैण्ड और फ्रांसीसियो का आगमन हुआ। इन कंपनियो में फ्रांसीसियो को छोड़कर किसी ने इन भू-भाग पर अपना राजनीतिक प्रभुत्व कायम करने का प्रयास नहीं किया, लेकिन फ्रांस शुरू से ही इसी दिशा में प्रयासरत रहा। 17 वी शताब्दी में बहुत से फ्रांसीसी व्यापारी पादरी हिन्द चीन पहुँच गए।

कंपनियो का आगमन
(i) पुर्तगाली (ii) डच
(iii) इंग्लैण्ड (iv) फ्रांस

सन् 1747 ई० के बाद से ही फ्रांस अन्नाम में रूचि लेने लगा। 1787 ई० में कोचीन-चीन के शासक के साथ संधि का मौका मिला। लेकिन अभी तक फ्रांसीसी अपनी ताकत का प्रभुत्व नही जमा पाए थे और 19 वीं शताब्दी में अन्नाम, कोचीन-चीन में फ्रांसीसी पादरियो की बढ़ती गतिविधियों के विरूद्द उग्र आन्दोलन हो रहे थे। फिर भी 1862 ई० में अन्नाम को सैन्य बल पर संधि के लिए बाध्य किया गया। उसके अगले वर्ष कम्बोडिया भी संरक्षण में ले लिया गया और 1783 में तोंकिन में फ्रांसीसी सेना का प्रवेश हुआ। इसीतरह 20 वीं शताब्दी के आरंभ तक सम्पूर्ण हिन्द चीन फ्रांस की अधीनता में आ गया।

फ्रांस द्वारा उपनिपेश स्थापना का उद्देश्य-

फ्रांस द्वारा हिन्द चीन को अपना उपनिवेश बनाने का प्रारंभिक उद्देश्य डच एवं ब्रिटिश कंपनियो के व्यापारिक प्रतिस्पर्धा का सामना करना था। भारत में फ्रांसीसी कमजोर पड़ रहे थे। चीन में उनकी व्यापारिक प्रतिद्वंदिता, मुख्य रूप से इंग्लैण्ड से था। अतः सुरक्षात्मक आधार के रूप में उन्हें हिन्द चीनी क्षेत्र उचित लगा, जहाँ खड़े हो कर वे दोनो तरफ भारत एवं चीन

१८६२–कोचीन चीन
१८६३–कम्बोडिया
१८८४–अन्नाम
१९०४–लाओस

को कठीन परिस्थितियो में संभल सकते थे। दूसरे, औद्योगीकरण के लिए कच्चे माल की आपूर्ति उपनिवेशों से होती थी एवं उत्पादित वस्तुओं के लिए बाजार भी उपलब्ध होता था। तीसरे, पिछड़े समाजो को सभ्य बनाना विकसित यूरोपीय राज्यों का स्वघोषित दायित्व था।

फ्रांसीसियों ने प्रारंभिक शोषण व्यापारिक नगरो एवं बंदरगाहो से शुरू किया था। उसके बाद उन्होंने भीतरी ग्रामीण इलाको में किसानो का शोषण करना शुरू किया। तोंकिन के जीवन का आधार लाल घाटी थी जबकि कम्बोडिया का मेकांग नदी का मैदानी क्षेत्र एव कोचीन-चीन का मेकांग का डेल्टा क्षेत्र। चीन से सटे राज्यो में खनिज संसाधन कोयला, टीन, जस्ता, टंगस्टन, क्रोमियम आदि मिलते थे, पहाड़ी इलाकों में रबर की खेती होती थी और मैदानी क्षेत्र में धान की।

सर्वप्रथम फ्रांसीसियो ने शोषण के साथ-साथ कृषि की उत्पादकता बढ़ाने के लिए नहरो का एव जल निकासी का समुचित प्रबंध किया और दलदली भूमि, जंगलो आदि में कृषि क्षेत्र को बढ़ाया जाने लगा। इन प्रयासो का ही फल था कि 1931 ई० तक वियतनाम विश्व का तीसरा बड़ा चावल निर्यातक देश बन गया। रबर वगानो फार्मो, खानो में मजदूरो से एकतरफा अनुबंध व्यवस्था पर काम लिया जाता था। जमींदारी अपने विकृत रूप में आ चुकी थी। हलांकि इसी दौरान पूरे उत्तर से दक्षिण हिन्द चीन तक संरचनात्मक विकास तीव्र गति पर रहा एवं एक विशाल रेल नेटवर्क एवं सड़क का जाल सा बिछ गया। परन्तु किसानो एवं मजदूरो का जीवन स्तर गिरता जा रहा था, क्योकि सारी व्यवस्था ही शोषण-मूलक थी।

एकतरफा अनुबंध व्यवस्था- एक तरह की बंधुआ मजदूरी थी वहाँ मजदूरों का कोई अधिकार नही था, जबकि मालिक को असिमित अधिकार प्राप्त था।

जहाँ तक शिक्षा का प्रश्न था अब तक परंपरागत स्थनीय भाषा अथवा चीनी भाषा में शिक्षा पा रहे लोगो को अब फ्रांसीसी भाषा में शिक्षा दी जाने लगी परन्तु इस क्षेत्र में बसने वाले फ्रांसीसियो को शिक्षा के प्रसार के साकारात्मक प्रभावो का डर था। अत: आमलोगो को शिक्षा से दूर रखने का प्रयास किया जाने लगा। इसके लिए स्कूल के अंतिम साल की परीक्षा में प्राय: अधिकतर स्थानीय बच्चो को फेल कर दिया जाता था। स्थानीय जनता एवं कोलोनो की सामाजिक स्थिति में आसमान जमीन का अन्तर था और 1920 के दशक तक आते आते छात्र छात्राएँ राजनीतिक पार्टिया बनाने लगे थे। हनोई विश्वविद्यालय का बंद किया जाना फ्रांसीसी शोषण की पराकाष्ठा थी।

हिन्द चीन में बसने वाले फ्रांसीसी कोलोन कहे जाते थे।

हिन्द चीन में राष्ट्रीयता का विकासः-

हिन्द चीन में फ्रांसीसी उपनिवेशवाद को समय-समय विद्रोहो का सामना तो प्रारंभिक दिनो से ही झेलना पड़ रहा था; परन्तु 20 वी शताब्दी के शुरू में यह और मुखर होने लगा। अब छोटे-छोटे मामले में भी लोग अपना असंतोष प्रकट करने लगे थे। उसी परिपेक्ष्य में 1903ई० में **फान-बोई-चाऊ** ने **'दुई तान होई'** नामक एक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की जिसके नेता **कुआंग दें** थे। **फान बोई चाऊ ने ''द हिस्ट्री ऑफ द लॉस ऑफ वियतनाम'' लिख कर हलचल पैदा कर दी ।**

1905 में जापान द्वारा रूस को हराया जाना हिन्द चीनियो के लिए प्रेरणा स्रोत बन गया साथ ही रूसो एव माण्टेस्क्यू जैसे फ्रांसीसी विचारको के विचार भी इन्हे उद्वेलित कर रहे थे। इसी समय एक दूसरे राष्ट्रवादी नेता **फान चू त्रिन्ह** हुए जिन्होने राष्ट्रवादी आन्दोलन के राजतंत्रीय स्वरूप को गणतंत्रवादी बनाने का प्रयास किया। जापान में शिक्षा प्राप्त करने गए छात्र इसी तरह के विचारो के समर्थक थे। सन्यात सेन के नेतृत्व में चीन में सत्ता परिवर्त्तन ने इन्हे और बढ़ावा दिया। इन्ही छात्रो नें **वियेत नाम कुवान फुक होईं** (वियतनाम मुक्ति एसोसिएशन) की स्थापना की।

हालांकि हिन्द चीन में प्रारंभिक राष्ट्रवाद का विकास कोचीन-चीन, अन्नाम तोंकिन जैसे शहरो तक ही सीमित था; परन्तु जब प्रथम विश्व युद्ध शुरू हुआ तो इन्ही प्रदेशों के हजारो लोगो को सेना में भरती किया गया, हजारो मजदूरो को बेगार के लिए फ्रांस ले जाया गया। यहाँ के सैनिकों को युद्ध की प्रथम पंक्ति में रखा जाता था अतः मारे जाने वाले में इनकी संख्या ज्यादा होती थी। इन सब बातो की प्रतिक्रिया हिन्द चीनी लोगो पर हुई और 1914 ई० में ही देशभक्तो ने एक **''वियतनामी राष्ट्रवादी दल''** नामक संगठन बनाया, जिसका पहला अधिवेशन कैंण्टन में हुआ। लेकिन संशंकित फ्रांसीसी सरकार ने इसे कुचल डाला। दूसरी तरफ, जनता की हालत निरंतर दयनीय होती जा रही थी। चीन का हिन्द चीन के कृषि उत्पाद, व्यापार एवं मत्स्य व्यापार पर नियंत्रण था फिर ीाी ये मुख्य राजनीति से अलग रहते थे । इसी कारण जनता ने इनसे क्रुद्ध होकर 1919 में चीनी-बहिस्कार आन्दोलन किया था।

हिन्द चीन में फ्रांसीसी प्रभुत्व की स्थापना के साथ ही शासन व्यवस्था पर ध्यान दिया गया । हालांकि कोचीन-चीन ही सीधे फ्रांसीसी प्रशासन में था जबकि अन्य चार प्रांत तोंकिन, अन्नाम कम्बोडिया और लाओस में पुरातन राजवंश ही कायम रहे जिसके लिए रेजिडेन्टो की नियुक्ति होती थी। प्रथम विश्व युद्ध के बाद प्रशासन में कुछ उदार नीतियां अपनाई गयी। कोचीन-चीन के लिए एक

प्रतिनिधि सभा का गठन किया गया और उसके सदस्यो के निर्वाचन की व्यवस्था की गयी थी। साथ ही असैन्य प्रशासन में स्थानीय लोगो को महत्व दिया जाना शुरू हुआ। कुछ हद तक राज घरानो ने भी अपने प्रशासन में सुधार का प्रयास किया, परन्तु इन नाम मात्र के सुधारो से जनता संतुष्ट नहीं हो सकती थी। इन्ही परिस्थितियो में 1917 ई० में **''न्यूगन आई क्वोक''** (**हो-ची मिन्ह**) नामक एक वियतनामी छात्र ने पेरिस मे ही साम्यवादियो का एक गुट बनाया। बाद में हो-ची मिन्ह शिक्षा प्राप्त करने मास्को गया और साम्यवाद से प्रेरित होकर 1925 में **''वियतनामी क्रांतिकारी दल''** का गठन किया, साथ ही कार्यकर्त्ताओ के सैनिक प्रशिक्षण की भी व्यवस्था कर ली। अंततः 1930 में वियतनाम के विखरे राष्ट्रवादी गुटो को एक जुट कर **'वियतनाम कांग सान देंग'** अर्थात वियतनाम कम्युनिष्ट पार्टी की स्थापना की जो पूर्णतः उग्र विचारो पर चलने वाली पार्टी थी।

हो-चि-मिन्ह

जोन्गुएन आई ने अनामी दल की स्थापना की थी। यह पार्टी पूर्णतः मास्को के कैन्टन से प्रभावित थी और आंतकी विचारों वाली पार्टी थी।

1930 के दशक की विश्वव्यापी मंदी ने भी राष्ट्रवाद के विकास में योगदान किया। चावल, रबर आदि के दाम गिर गए थे। हिन्द चीन में बेरोजगारी बढ़ती चली जा रही थी। इस स्थिति से परेशान किसान भी साम्यवाद को अपना रहे थे और राष्ट्रवादी आन्दोलन जोर पकड़ता जा रहा था। दूसरी तरफ फ्रांसीसी सरकार का दमन चक्र काफी तीव्र एवं क्रूर होता जा रहा था। विद्रोही जनता पर निर्ममता से गोलियां बरसायी जाती थीं। इससे भी आगे बढ़कर हवाई जहाजो से बमबारी भी की जाती थी। इस दमनचक्र में हजारो लोग मारे गए। आन्दोलन दब सा गया, परन्तु यह सोए हुए ज्वालामुखी के समान ही था जो अन्दर ही अंदर खौलता रहा और भूमिगत आन्दोलन की शुरूआत हो गयी।

द्वितीय विश्व युद्ध और वियतनामी स्वतंत्रता:-

द्वितीय विश्वयुद्ध की परिस्थितियो ने वियतनामियो को एक निर्णायक रास्ता प्रदान किया। जून 1940 ई० में फ्रांस जमर्नी से हार गया और फ्रांस में जर्मन समर्थित सत्ता कायम हो गयी। अमेरिका और ब्रिटेन **'च्यांग काई शेक'** की सरकार को मदद पहुँचाना चाहते थे। लेकिन एक संधि के तहत जापान को हिन्द चीन में फौज भेजने का मौका मिल गया। इसका फायदा उठाते हुए जापान ने पहले तोंकिन फिर अन्नाम और अंतत: पूरे हिन्द चीन पर अपना राजनीतिक प्रभुत्व जमा लिया।

यह हिन्द चीन में एक तरह का द्वैध शासन था जिसमें सत्ता जापानियो के हाथ थी एवं प्रशासनिक मुखौटा फ्रांसीसियो का था। इस के फलस्वरूप वियतनाम के गुप्त क्रांतिकारियो को

जापान का हिन्द चीन पर आक्रमण

अवसर मिल गया और वे जापानियो और फ्रांसीसियो दोनो के विरूद्ध कार्यवाही करने लगे। फ्रांसीसी दमन के वावजूद साम्यवादी दल बचा हुआ था और लोगो का स्वभाविक झुकाव इस तरफ बढ़ रहा था। 'हो ची मिन्ह' के नेतृत्व में देश भर के कार्यकर्ताओं ने **'वियतमिन्ह' (वियतनाम स्वतंत्रता लीग)** की स्थापना कर पिड़ित किसानो, आतंकित व्यापारियो, बुद्धिजीवियो सभी को शामिल कर छापामार युद्ध नीति का अवलम्वन किया।

द्वितीय विश्व युद्ध के समय पर्ल हार्वर पर जापान के आक्रमण के साथ ही अमेरिका युद्ध में शामिल हो गया । 1944 में फ्रांस जर्मनी के आधिपत्य से निकल गया और जापान पर अमेरिकी परमाणु आक्रमण के पश्चात 'पोट्सड्म की घोषणा' के तहत जापान ने आत्मसर्म्पण कर दिया। इस स्थिति में जापान की सेनाए वियतनाम से निकलने लगी और फ्रांस के पास इतनी शक्ति नहीं बची थी कि खुद को पुन: हिन्द चीन में स्थापित रख सके। इस का लाभ उठाते हुए वियतनाम के राष्ट्रवादियो ने वियतमिन्ह के नेतृत्व में लोकतंत्रीय गणराज्य सरकार की स्थापना 2 सितम्बर 1945 ई० को करते हुए वियतनाम की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी, इस सरकार का प्रधान हो ची मिन्ह बनाए गए ।

चुंकि हिन्द चीन अनेक राज्यो में विभक्त था और जापानी सेनाएँ हिन्द चीन से निकल रही थी, कंबोडिया, लाओस, अन्नाम में पुन: प्राचीन राजवंशो को प्रतिष्ठिा मिली। इसी क्रम में अन्नाम का शासक बाओदायी बना। परन्तु इन शासको का साम्यबादी राष्ट्रवादियो के समक्ष टिकना कठिन था। अत: बाओदाई ने 25 अगस्त 1945 को ही अपना पद छोड़ दिया और वियतनाम एक गणराज्य बन गया।

बाओदायी

हिन्द चीन के प्रति फ्रांसीसी नीति :

द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात ब्रिटेन, हालैण्ड, अमेरिका और फ्रांस दक्षिण-पूर्व एशिया में अपने सम्राज्यो की पुर्नस्थापना में लग गए। फ्रांस भी हिन्द चीन में अपने डूबे सम्राज्य को बचाना चाहता था अत: उसने एक नये औपनिवेशिक तंत्र की **योजना बनाई।**

(***फ्रांस की औपनिवेशिक योजना:***- (i) फ्रांस के विशाल सम्राज्य को एक यूनियन में बदल दिया जाएगा जिसमें सभी अधिनस्थ उपनिवेश रहेगें। (ii) हिन्द चीन इस फ्रांसीसी महासंघ का एक स्वशासित अंग होगा। (iii) हिन्द चीन के संरक्षित राज्यो एवं कोचीन चीन को मिलाकर एक संघ बनाया जाएगा (iv) हिन्द चीनी संघ के विदेश नीति एवं सैन्य पर फ्रांस का नियंत्रण रहेगा।

फ्रांस ने घोषणा की कि 'फ्रांस के विशाल सम्राज्य को एक यूनियन बना दिया जाएगा, जिसमें अधिनस्थ उपनिवेश शामिल रहेगें'। इस महासंघ का एक अंग हिन्द चीन भी होगा। अधिनस्थ उपनिवेशो के सेना एवं विदेश नीति पर फ्रांस का नियंत्रण रहेगा। यह राष्ट्रमंडल का विस्तृत रूप जैसा था। परन्तु जापानी सेनाओ के हटते ही, फ्रांसीसी सेना जैसे ही सैगान पहुँची वियतनामी छापामारो ने भयंकर युद्ध किया और फ्रांसीसी सेना सैगान में ही फंसी रही। अंतत: **६ मार्च १९४६ को हनोई-समझौता** फ्रांस एवं वियतनाम के बीच हुआ जिसके तहत फ्रांस ने वियतनाम को गणराज्य के रूप में स्वतंत्र इकाई माना, साथ ही माना गया कि यह गणराज्य हिन्द चीन संघ में रहेगा और हिन्द चीन संघ फ्रांसीसी यूनियन में रहेगा। फ्रांसीसी सेना के तोंकिन में प्रवेश का अधिकार भी मान लिया गया।

फ्रांस की महत्वकांक्षी नीति के कारण वियतनाम के साथ हिन्द चीन संघ निर्माण पर समझौता नहीं हो पाया। फ्रांस चाहता था कि निर्मित संघ का अध्यक्ष उसके द्वारा नियुक्त हाई-कमिश्नर हो और वियतनामी नेताओ की मांग थी कि संघ के सभी राज्य स्वतंत्र हो। तभी फ्रांस ने कोचीन चीन में एक पृथक सरकार स्थापित कर लिया जिससे हनोई समझौता टूट गया। फ्रांस को कुछ वियतनामी प्रतिक्रियादी ताकतो का समर्थन मिल गया जिनके सहयोग से नवगठित सरकार चलने लगी। अब तक हो ची मिन्ह की ताकत इतनी नहीं हुई थी कि फ्रांसीसी सेना का प्रत्यक्ष मुकाबला कर सके अत: पुन: गुरिल्ला युद्ध शुरू हो गया।

गुरिल्ला युद्ध का लाभ उठाते हुए फ्रांस ने पेरिस से बाओदाई को बुलाकर वियतनाम का शासक बना दिया। चूंकी फ्रांस को उम्मीद थी कि कम्युनिष्ट विरोधी वियतनामी बाओदाई का समर्थन करेगे। अब तक पूरा विश्व दो खेमो में बंट चुका था पूँजीवादी एवं साम्यवादी। पूँजीवादी देशों, यथा अमेरिका एवं ब्रिटेन का समर्थन भी फ्रांस को प्राप्त था। इससे हो ची मिन्ह को कुछ परेशानियाँ उठानी पड़ी क्योकि अभी तक वह पूर्ण साम्यवादी सरकार का गठन नहीं कर पाया था। उसके संयुक्त मोर्चो में गैर साम्यवादी राष्ट्रवादी ताकते भी थी। परन्तु 1949 में हो ची मिन्ह ने खुले तौर पर जनवादी चीनी गणराज्य को अपना आदर्श स्वीकार कर लिया और पूर्णत: साम्यवादी बन गया। 1950 में रूस एवं चीन ने वियतनाम गणराज्य को मान्यता दे दी साथ ही अत्यधिक सैनिक एवं तकनीकि सहायता उपलब्ध कराना शुरू कर दिया।

दिएन वियेन फू के युद्ध में गोली चलाना वियतनामी सिपाही

सन् 1950 में हिन्द चीन की स्थिती बहुत जटिल हो गयी क्योकि उतरी वियतनाम में हो ची मिन्ह की सरकार थी, और दक्षिण वियतनाम में फ्रांस समर्थित बाओदाई की सरकार थी। लाओस, कम्बोडिया में पुराने राजतंत्र थे जो फ्रांसीसी नियंत्रण में थे। लाओस एवं कम्बोडिया में स्वतंत्रता की मांग जोर पकड़ रही थी। गुरिल्ला सैनिक लाओस कंबेडिया के रास्ते दक्षिणी वियतनाम पर धावा बोलते थे और पुनः जंगलों में छिप जाते थे। इसी क्रम में दिएन-विएन फु पर गुरिल्ला सैनिको ने भयंकर आक्रमण किया। इस युद्ध में फ्रांस बुरी तरह हार गया। लगभग 16000 फ्रांसीसी सैनिको को आत्म समर्पण करना पड़ा एव दिन-विएन फु पर साम्यवादियो का अधिकार हो गया।

अमेरिकी हस्तक्षेपः-

अमेरिका जो अब तक फ्रांस का समर्थन कर रहा था, ने हिन्द चीन में हस्तक्षेप की नीति अपनायी साभ्यवादियो के विरोध में उसने इसकी घोषणा भी कर दी। चूंकि रूस एक पक्ष का पहले से समर्थन कर रहा था अतः लग रहा था कि तृतीय विश्व युद्ध शुरू हो जाएगा। इन्हीं परिस्थितियो में मई 1954 में जेनेवा में हिन्द चीन समस्या पर वार्ता हेतु सम्मेलन बुलाया गया। जिसे **जेनेवा समझौता** कहा जाता है। जेनेवा समझौता ने पूरे वियतनाम को दो हिस्सो में बाँट

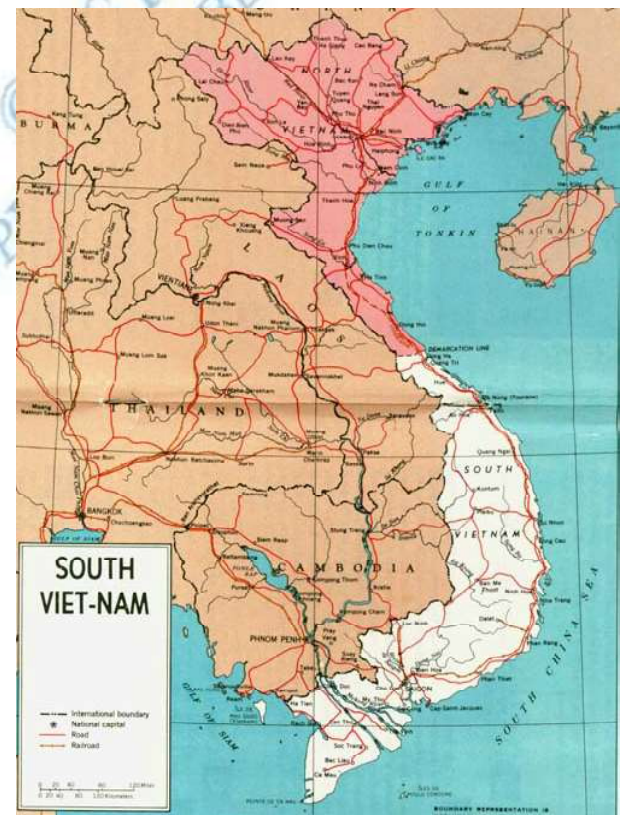

होआ-होआ एक बौद्धिष्ट धार्मिक क्रान्तिकारी आन्दोलन था, जो १९३९ में शुरू हुआ था जिसके नेता - हुइन्ह फू-सो था। क्रांतिकारी उग्रवादी घटनाओं को भी अंजाम देते थे, जिसमें आत्मदाह तक भी शामिल होता था।

दिया। हनोई नदी से सटे उत्तर का क्षेत्र उतरी वियतनाम साम्यवादियो और उससे दक्षिण में दक्षिणी वियतनाम अमरिका समर्थित सरकार को दे दिया गया। यहाँ एक धार्मिक वर्ग भी आन्दोलित था, यह था– **होआ-होआ।** होआ-ओआ आन्दोलन काफी आक्रामक हो गया था। न्यो दिन्ह दियम ने बड़ी क्रुरता से इन आन्दोलनो को दबाना शुरू किया।

लाओस एव कम्बोडिया में जेनेवा समझौता के फलस्वरूप शासन व्यवस्था बदल गयी। वहाँ वैध राजतंत्र के रूप को स्वीकार किया गया और संसदीय शासन प्रणाली अपनाया गया। यद्यपि इन्हें तटस्थ देश माना गया था, परन्तु साम्यवादी प्रभाव इन देशो में बढ़ता जा रहा था। दूसरी तरफ अमेरिका इन क्षेत्रो को साम्यवादी प्रभाव में जाने से रोकने को कृत संकल्प था।

लाओस में गृह-युद्ध :-

लाओस की राजनीतिक सीमा पूरब में उतरी वियतनाम की सीमा को छूती थी। 1954 ई० मे ही स्पष्ट हो गया था कि उत्तरी लाओस के दो प्रांत फुंगसाली एव होऊअफ्रांस में साम्यवादियो का प्रभुत्व था और ये अपने विस्तार के लिए उद्धत थे। जब लाओस में राजतंत्र को हटाकर संसदीय प्रणाली अपनायी गयी तो वहाँ राजनीतिक अस्थिरता का दौर शुरू हुआ। लाओस एवं कम्बोडिया की पूर्ण स्वतंत्रता को मान लिया गया। यह भी व्यवस्था की गयी कि 1956 के मध्य के पहले सम्पूर्ण वियतनाम का चुनाव द्वारा एकीकरण कर एक सरकार का गठन किया जाए यदि जनता ऐसा चाहे। जेनेवा समझौता के क्रियान्वयन की देख भाल के लिए एक त्रिसदस्यीय अंतराष्ट्रीय निगरानी आयोग का गठन किया गया, जिसके सदस्य भारत, कनाडा एव पोलैण्ड थे।

WEB COPY © RSTB NOT TO

हिन्द चीन में उथल पुथलः-

जेनेवा समझौता ने तात्कालिक रूप से कुछ शांति अवश्य दी, परन्तु तुरन्त ही हिन्द चीन में उथल पुथल आरंभ हो गई। क्योंकि उतरी वियतनाम में हो-चीमिन्ह की सरकार सुदृढ़ हो गयी और पूरे वियतनाम के एकीकरण पर विचार करने लगी परन्तु दक्षिणी वियतनाम की स्थिति इसके विपरीत थी। अमेरिका समर्थित बाओदाई सरकार का संचालन **न्यो-दिन्ह-दियम** के हाथो में था।

इन दिनो दक्षिणी वियतनाम में साम्यवादियो के साथ-साथ अपदस्थ राजघराने के तीन सौतेले भाईयों ने लाओस पर अपनी राजनीतिक पकड़ के लिए अलग-अलग रास्ते अपना लिए थे, इनमें पहला राजकुमार **सुवन्न फूमा** तटस्थतावादी था, दूसरा राजकुमार **सुफन्न बोंग** जो **पाथेट लाओ** नाम से विख्यात था और अपना सैन्य संगठन बनाकर समुचे लाओस में साम्यवादी व्यवस्था लाना चाहता था और तीसरा राजकुमार **फुमी नौसवान** दक्षिणपंथ का अनुसारण करने वाला था। इन तीनो के आपसी राजतीतिक वर्चस्व का संघर्ष ही लाओस की अस्थिरता का कारण था। उसपर रूस एव अमेरिका दोनो गुटो का समर्थन एव हस्तक्षेप इसे और बढ़ा रहा था।

25 दिसम्बर 1955 ई० को लाओस में चुनाव के बाद राष्ट्रीय सरकार का गठन हुआ और सुवन्न फूमा के नेतृत्व में सरकार बनी। पाथेट लाओ ने इसका विरोध करते हुए गुरिल्ला युद्ध शुरू कर दिया, परन्तु 1957 में दोनो में समझौता हो गया और पाथेट लाओ की पार्टी **'नियो-लियो-हकसत'** (एन.एल.एच.एस.) के सदस्यों को भी सरकार में जगह मिल गयी थी। यह स्थिति अमेरिका के लिए असह्य थी। चूंकि पाथेट लओ वामपंथी था, अमेरिकी षड़यंत्र के कारण दोनो भाईओ में समझौता टूट गया और पुनः गुरिल्ला युद्ध शुरू हो गया। इसी बीच तीसरे भाई जेनरल फूमी नौसवान को मौका मिल गया। उसने निर्वाचित सरकार का तख्ता पलट कर दक्षिण पंथी सरकार बना ली। तीन माह बाद फिर तख्ता पलट हुआ और **कैप्टन कांगली** के नेतृत्व में सैनिक सरकार बनी। परन्तु तीनो भाईयो ने मिलकर कैप्टन कांगली को उत्तर की ओर भगा दिया। इस तरह लाओस एक भयंकर गृह युद्ध में फंस गया।

लाओस के गृह युद्ध में अमेरिका-रूस की परोक्ष सहभागिता ने एक बार फिर विश्वशांति को खतरे में डाल दिया। तब भारत ने जेनेवा समझौता के अनुरूप अंतरराष्ट्रीय नियंत्रण आयोग को पुनर्जीवित करने की मांग उठायी। अंततः इस समस्या पर 14 राष्ट्रो का एक सम्मेलन बुलाना तय

हुआ, जिसमें लाओस के तीनो पक्षो की भागीदारी पर रूस अमेरिका भी सहमत थे। मई 1961 में यह सम्मेलन हुआ जिसमें सभी राजकुमाारो ने संयुक्त मंत्रिमण्डल के गठन पर सहमति प्रदान की और मंत्रिमण्डल भी बना, परन्तु अमेरिकी षडयंत्र के कारण लाओस के विदेश मंत्री की हत्या हो गयी और गृह युद्ध पुनः शुरू हो गया। चूंकि अमेरिका लाओस में साम्यवादी प्रसार नही चाहता था, अतः चुनाव द्वारा सुवन्न फूमा को प्रधाानमंत्री बनाया गया और सुफन्न बोंग उप प्रधानमंत्री बना। इससे असंतुष्ट पाथेट लाओ ने सन् 1970 में लाओस पर आक्रमण कर **जार्स** के मैदान पर कब्जा कर लिया। हलांकि अमेरिका ने इस युद्ध में जम कर बमबारी किया परन्तु पाथेट लाओ के आक्रमण को रोका नही जा सका।

हो चीन मिन्ह मार्ग पर बमबारी का चित्र

रूस ने लाओस पर आक्रमण और उसके बिगड़ती स्थिति की जिम्मेदारी अमेरिका पर सौंपा। अमेरिका के खुल कर युद्ध में आ जाने से यह जटिल स्थिति उत्पन्न हुई थी। 1971 में हजारो दक्षिणी वियतनामी सैनिकों ने लाओस में प्रवेश किया उनके साथ अमेरिकी सैनिक, युद्धक विमान एवं बमवर्षक हेलिकाप्टर भी थे। इनका उद्देश्य **हो-ची-मिन्ह** मार्ग पर कब्जा करना था। पाथेट लाओ ने रूस और ब्रिटेन से अनुरोध किया कि वे अमेरिका पर दबाव डाल कर उन्हें रोकें। परन्तु चीन ने अमेरिका को धमकी दी। पहले अमेरिका को लगा कि वह युद्ध जीत लेगा, परन्तु हो-ची मिन्ह मार्ग क्षेत्र पर जा कर उसकी सेनाए फंस गयी। लाओस के प्रबल प्रतिरोध के कारण उसके लिए वापस लौटना ही मात्र एक उपाय था। इस तरह अमेरिका अपने आक्रमण में वामपंथ के प्रसार को रोक नहीं पाया।

कंबोडियायी संकट :–

सन् 1954 ई० में स्वतंत्र राज्य बनने के बाद कम्बोडिया में संवैधानिक राजतंत्र को स्वीकार कर राजकुमार नरोत्तम सिंहानुक को शासक माना गया। नरोत्तम सिंहानुक 1954 से ही कम्बोडिया को गुटनिरपेक्षता एवं तटस्थता की नीति पर चलाना शुरू का दिया था। इसलिए कम्बोडिया दक्षिण पूर्व एशियाई सैन्य संगठन में शामिल नहीं हुआ। अमेरिका इन क्षेत्रो में अपना प्रभाव चाहता था, इसी कारण वह सिंहानुक से चिढ़ा हुआ था और थाईलैण्ड को उकसा कर कम्बोडिया को तंग करवा रहा था। अमेरिका की इस कूटनीतिक चाल के कारण 1963 में सिंहानुक ने उससे भी किसी तरह की मदद लेने से इंकार कर दिया। यह बात अमेरिका के लिए अपमान जनक थी। मई 1965 में उसने वियतनाम के साथ कम्बोडिया के सीमावर्ती गांवो पर आक्रमण कर दिया। तब सिंहानुक ने अमेरिका से राजनयिक सम्बंध तोड़ लिए। आगे चलकर सन् 1969 में अमेरिका ने कम्बोडिया सीमा क्षेत्र में जहर की वर्षा हवाई जहाज से करवा दी, जिससे लगभग 40 हजार एकड़ भूमि की रबर की फसल नष्ट हो गयी। तब सिंहानुक ने मुआवजे की मांग अमेरिका से की एवं रूस की ओर झुकाव दिखाते हुए पूर्वी जर्मनी से राजनयिक सम्बंध बढ़ाने शुरू किये।

नरीत्तम सिंहानुक

तत्कालीन दो गुटिय विश्व व्यवस्था में पूंजीवादी अमेरिका यह नही चाहता था कि कम्बोडिया साम्यवादी देशों

© BSTBPC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

के प्रति सहानुभूति रखे। अतः उसने, कम्बोडिया के गुटनिरपेक्षता को एक पक्षीय मानते हुए यह आरोप लगाया कि सिंहानुक सरकार का संम्बध उत्तरी वियतनाम एवं **वियतकांगों** से है। इसलिए अमेरिका सी०आई०ए० के माध्यम से कम्बोडियायी दक्षिणपंथियों को संगठित कर सिंहानुक को सत्ताच्युत करना चाहता था। अमेरिकी षडयंत्र के कारण 1970 में दक्षिणपंथियो ने वियतनाम के दूतावास के समक्ष उग्र प्रदर्शन किया। इसी परिपेक्ष्य में सिंहानुक को वियतनाम के प्रति कठोर रूख अपनाना पड़ा। 18 मार्च 1970 को कम्बोडियायी राष्ट्रीय संसद ने नरोत्तम सिंहानुक को सर्वसम्मत प्रस्ताव द्वारा सत्ता से हटा दिया और **जरनल लोन नोल** के नेतृत्व में सरकार बनी जिसे अमेरिका का समर्थन प्राप्त था।

नरोत्तम सिंहानुक ने पेकिंग में निर्वासित सरकार का गठन कर जनरल लोन नोल की सरकार को अवैध घोषित कर दिया साथ ही राष्ट्रीय संसद को भंग कर दिया और जनता से मौजूदा सरकार को अपदस्थ करने की अपील की। अप्रैल 1970 से सिंहानुक ने नयी सरकार के विरूद्ध युद्ध छेड़ दिया, जिसमें उत्तरी वियतनाम एव वियतकांग सैनिको से भरपूर मदद मिल रही थी। नरोत्तम सिंहानुक की सेना विजयी होती हुयी राजधानी नामपेन्ह की ओर बढ़ रही थी। अमेरिका ने तुरंत इसमें हस्तक्षेप किया। दक्षिणी वियतनाम से अमेरिकी फौज कम्बोडिया में प्रवेश कर गयी और व्यापक संघर्ष शुरू हो गया। यह युद्ध बड़ा ही भयंकर था।

अमेरिकी राष्ट्रपति की इस नीति का व्यापक विरोध अमेरिकी भी कर रहे थे। राष्ट्रपति **निक्सन** को अपनी सेनाए वापस बुलाने की घोषणां करनी पड़ी परन्तु दक्षिणी वियतनाम ने अपनी सेना कम्बोडिया में रहने देने की घोषण कर स्थिति को और जटिल बना दिया। अब लग रहा था कि चीन भी कम्बोडिया मामले में हस्तक्षेप करेगा। इस तरह एक बार पुनः दक्षिण पूर्वी एशिया की सुरक्षा खतरे में पड़ गयी। स्थिति को भांपते हुए इन्डोनेशिया ने एशियायी देशो का सम्मेलन बुलाने का प्रस्ताव रखा। **१६ मई १९७० को जकार्ता** में एक सम्मेलन बुलाया गया। यद्यपि यह सम्मेलन सफल रहा परन्तु कम्बोडिया की स्थिति में कोई परिवर्तन नही आया।

कम्बोडियायी छापामारों, अमेरिकी सेना के बीच युद्धो, बमबारी नृशंश हत्याओं के इस दौर में ही 9 अक्टूबर 1970 को कम्बोडिया को गणराज्य घोषित किया गया। परन्तु सिंहानुक एव लोन नोल की सेनाओ में संघर्ष चलता रहा। पांच वर्ष पश्चात सिंहानुक ने निर्णायक युद्ध का ऐलान किया और उनकी लाल खुमेरी सेना विजय करती आगे बढ़ती गयी अंततः लोन नोल को भागना पड़ा।

अप्रैल 1975 में कम्बोडियायी गृह युद्ध समाप्त हो गया। नरोतम सिंहानुक पुनः राष्ट्राध्यक्ष बने परन्तु 1978 में उहन्होने राजनीति से सन्यास ले लिया।

अब कम्बोडिया का नाम बदल कर कम्पुचिया कर दिया गया। नरोत्तम सिंहानुक के बाद **खिऊ सम्फान एवं पोलपोट** जैसे अतिवादी संगठनों का उदय हुआ। जिन्होने अपने मार्क्स-वादी विचार धारा के अनुरूप शासन शुरू किया। यह दौर पूरी तरह आतंक का दौर था, परन्तु 1979 में हेंग सामरिन ने एक संयुक्त मोर्चे का गठन कर खिऊ सम्फान एव 'पोलपोट' को पराजित कर दिया। इस स्थिति में रूस-चीन आमने सामने आ गए और चीन ने वियतनाम पर अक्रमण कर दक्षिण पूर्वी एशिया में अपनी शक्ति का परिचय दिया। हालांकी अमेरिकी नीति कंपुचिया मामले में सफल नही रही और वह साम्यवाद को फैलने से नहीं रोक पाया, परन्तु दो साम्यवादी देशो रूस एव चीन को आमने सामने लाने में उसकी नीति आवश्य सफल हो गयी।

वियतनामी गृह युद्ध और अमेरिकाः-

जेनेवा समझौता से दो वियतनामी राज्यो का जन्म तो अवश्य हो गया था परन्तु स्थायी शांति की उम्मीद नही के बराबर ही थी, क्योकि उत्तरी वियतनाम में जहाँ साम्यवादी सरकार थी वही दक्षिणी वियतनाम में पूंजीवाद समर्पित सरकार थी। जेनेवा समझौता में यह कहा गया था कि अगर जनता चाहे तो मध्य 1956 तक चुनाव कराकर पूरे वियतनाम का एकीकरण किया जाएगा। उसी समय से वियतनामी जनता उसके एकीकरण के पक्ष में आवाज उठाती रही थी जिसे उत्तरी वियतनाम का पूर्ण समर्थन था, जबकि दक्षिणी वियतनाम की जनता शांतिपूर्ण प्रयासो से चुक गयी, तो 1960 में 'वियतकांग' (राष्ट्रीय मुक्ति सेना) का गठन कर अपने सरकार के विरूद्ध हिंसात्मक संघर्ष शुरू कर दी। 1961 ई० तक स्थिति इतनी विगड़ गयी कि दक्षिणी वियतनाम में आपात काल की घोषणा कर दी गयी और वहाँ गृह युद्ध शुरू हो गया।

अमेरिका जो दक्षिणी वियतनाम मे साम्यवाद के प्रभाव को रोकना चाहता था ने 1961 सितम्बर में **''शांति को खतरा''** नाम से श्वेत पत्र जारी कर उतरी वियतनाम की हो ची मिन्ह सरकार को इस गृह युद्ध के लिए जिम्मेदार ठहराया और 1962 के शुरूआत में अपने 4000 सैनिको को दक्षिणी वियतनाम के मदद के लिए सौगॉन भेज दिया। वास्तविकता यह थी कि न्यो-दिन्ह-दियम की तानाशाही अत्याचारो से जनता तंग आ चुकी थी, बौद्ध जनता धार्मिक असहिष्णुता के कारण आत्म दाह कर रही थी। इसी को लेकर 1963 ई० में सेना ने विद्रोह कर न्यो-दिन्ह-

दियम को मार दिया और सैनिक सरकार की स्थापना हुयी, परन्तु यह भी प्रतिक्रियावादी थी। इस तरह सरकारों का आना जाना लगा रहा मगर किसी की भी नीति नही बदली और वियतकांग का संघर्ष चलता रहा।

5 अगस्त 1964 को अमेरिका ने उत्तरी वियतनाम पर आक्रमण कर कुछ सैनिक अड्डे तबाह कर दिए। तब अमेरिका को चेतावनी भरी ध मकियाँ रूस एवं चीन ने दिया, परन्तु इसका असर उस पर नही पड़ा। अमेरिका द्वारा शुरू किया गया यह युद्ध काफी हिंसक, बर्बर एव यातनापूर्ण था। इस युद्ध में खतरनाक हथियारों, टैको एव बमवर्षक विमानो का व्यापक प्रयोग किया गया था, साथ ही रासायनिक हथियारों नापाम, आरेंज एजेंट एव फास्फोरस बमो का जमकर इस्तेमाल किया गया था।

रासायनिक हथियार

नापाम यह एक तरह का आर्गेनिक कम्पाउड है जो अग्नि बमो में गैसोलिन के साथ मिलकर एक ऐसा मिश्रण तैयार करता थ जो त्वचा से चिपक जाता और जलता रहता था इसका व्यापक पैमाने पर वियतनाम में प्रयोग किया गया था।

यह युद्ध उत्तरी वियतनाम के साथ-साथ वियतकांग एव वियतकांग समर्थक दक्षणी वियतनामी जनता सभी से लड़ा गया था। निर्दोष ग्रामीणों की हत्या कर दी जाती थी। उनकी औरतो व लड़कियों के साथ पहले सामूहिक बलात्कार किया जाता था, फिर उन्हें मार दिया जाता था और अंत में पूरे गांव को आग के हवाले कर दिया जाता था। 1967 ई० तक अमेरिका इसे इतने बम वियतनाम में वर्षाए जितना द्वितीय विश्व युद्ध में जर्मनी ने इंग्लैण्ड के विरूद्ध नहीं गिराया था।

अमेरिका की इस तरह की कार्रवाइयों का विरोध राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय स्तर पर होने लगा। प्रसिद्ध दार्शनिक **रसेल** ने एक अदालत लगा कर अमेरिका को वियतनाम युद्ध के लिए दोषी करार दे दिया। इसके आर्थिक कुपरिणाम भी परिलक्षित होने लगे। प्रतिवर्ष 2 से 2.5 अरब डालर का अमेरिकी खर्च में वृद्धि हुयी। इसे अमेरिकी अर्थव्यवस्था डाँवाडोल होने लगी। अंतराष्ट्रीय बाजार में डालर का मूल्य काफी नीचे गिर गया। परन्तु अमेरिका ने दक्षिणी वियतनाम को अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बना लिया था और समझौते के सारे प्रयासो को विफल करता हुआ युद्ध को जारी रखे हुए था।

WEB COPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

एजेन्ट-आरेंज

यह एक ऐसा जहर था जिससे पेड़ो की पत्तियाँ तुरंत झुलस जाती थी एवं पेड मर जाता। जंगलो को खत्म करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता था। इसका नाम आरेंज पट्टियो वाले ड्रमो में रखे जाने के कारण पड़ा। अमेरिका इनका इस्तेमाल जंगलो के साथ खेतों और आबादी दोनों पर जमकर किया। इस जहर का असर आज भी नजर आता है, जन्मजात विकलांगता एव कैसर के रूप में ।

मिलता है जिसे इस समय देवी की तरह पूजा जाता था।

1968 के प्रारंभ में वियतकांग ने अमेरिकी शक्ति का प्रतिक पूर्वी पेंटागन सहित कई ठिकानो पर धावा बोल कर अमेरिकियों को काफी क्षति पहुँचाई। इन धावो ने यह स्पष्ट कर दिया कि वियतनाम के हौसले अभी भी काफी बुलंद है और यह भी स्पष्ट हो गया कि वियतनामियों की रशद पहुँचाने वाला मार्ग हो ची मिन्ह काफी मजबूत है क्योंकि इसे बमबारियों से नष्ट नहीं किया जा सका था। वस्तुत: **होची मिन्ह मार्ग** हनोई से चलकर लाओस, कम्बोडिया के सीमा क्षेत्र से गुजरता हुआ दक्षिणी वियतनाम तक जाता था, जिससे सैकड़ो कच्ची पक्की सड़के निकल कर जुड़ी थी। अमेरिका सैकड़ों बार इसे क्षतिग्रस्त

दूसरी तरफ वियतनामी अब साम्यवाद या किसी अन्य बातो के लिए नही बल्कि अपने अस्तित्व और अपने राष्ट्र के लिए लड़ रहे थे। यहाँ तक कि वियतनामी महिलाएं अपने पीठ पर बच्चे को बांधे फुलपैंट पहने हाथो में बंदूको को लिए गस्ती लगाती या सीधे युद्धो में शामिल होती देखी जा सकती थी, या फिर हो-ची- मिन्ह मार्ग की मरम्मती करते देखी जा सकती थी। प्राचीन नायिकाओ को अख्यानित कर स्त्रियो को प्रेरित भी किया जाता था। इसी संदर्भ में **त्रि-अयू** की कहानी भी सुनने को

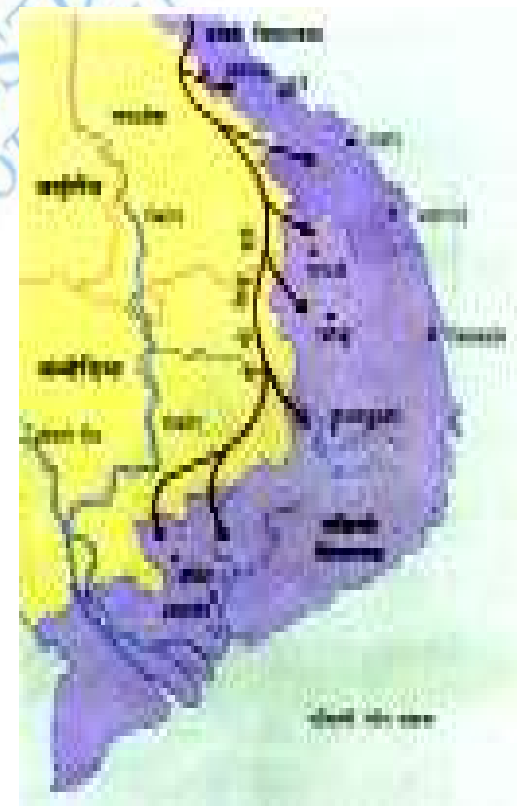

हो-ची-मिन्ह भूल-भूलैया मार्ग

WEB COPY © BSTBPC PUBLISHED

कर चुका था, परन्तु वियतकांग एवं उसके समर्थित लोग तुरंत उसका मरम्मत कर लेते थे। इसी मार्ग पर नियंत्रण करने के उद्देश्य से अमेरिका लाओस कम्बोडिया पर आक्रमण भी कर दिया था, परन्तु तीन तरफा संघर्ष में फंस कर उसे वापस होना पड़ा था।

राष्ट्रपति निक्सन

अब अमेरिका भी शांति वार्त्ता चाहता था, परन्तु अपनी शर्तो पर राष्ट्रमण्डल, संयुक्त राष्ट्रसंघ समेत कई शक्तियाँ इस प्रयास में थी कि वार्त्ता शुरू हो। अतः 1968 में **पेरिस** में शांति वार्त्ता शुरू हुई। अमेरिकी हठ के कारण 6 माह तक वार्त्ता एक ही जगह अटकी रही। वियतनामियो की मांग थी कि पहले बमबारी बंद हो फिर अमेरिका अपनी सेनाए हटाए। इसी क्रम में 7 जून 1969 को वियतनामी शिष्ट-मण्डल ने दक्षणी वियतनाम के मुक्त क्षेत्र में वियतकांग के सरकारों के गठन की घोषणा की, जिसे रूस एवं चीन ने तुरंत मान्यता दे दी। इसी दरम्यान वियतनामी राष्ट्रीयता के जनक हो-ची-मिन्ह की मृत्यु हो गयी। चूंकि उन्होने अपने वसीयत में दक्षिणी वियतनाम के मुक्ति तक संघर्ष का आह्वान किया था, अतः संघर्ष जारी रहा।

अमेरिकी असफलता और वियतनाम एकीकरणः-

अब हॉलिबुड द्वारा अमेरिका के वियतनाम युद्ध को जायज ठहराने वाली फिल्मों के स्थान पर अमेरिका के अत्याचार पर फिल्में बनने लगी। दूसरी तरफ निक्सन अमेरिका राष्ट्रपति चुनाव में जीत हासिल कर नया राष्ट्रपति बना वियतनाम समस्या का जल्द सामाधान की जिम्मेवारी

अमेरिकी शर्ते

1. दक्षिण वियतनाम की स्वतंत्रता 2. अमेरिकी सेनाए उस क्षेत्र में ही रहेगी 3. जब तब वियतकांग संघर्ष करेगा, दक्षिण वियतनाम में अतंक मचाएगा बमबारी जारी रहेगा।

उस पर सौंपी गयी। अन्तरराष्ट्रीय दबाव बढ़ता ही जा रहा था। इसी समय **''माई ली गॉव''** की एक घटना प्रकाश में आयी। अमेरिकी सेना की आलोचना पूरे विश्व में होने लगी। तब राष्ट्रपति निक्सन ने शांति के लिए पांच सुत्री योजन की घोषणा की। (i) हिन्द-चीन की सभी सेनाए युद्ध बंद कर यथा स्थान पर रहे। (ii) युद्ध विराम की देख रेख अंतरराष्ट्रीय पर्यवेक्षक करेगे। (iii) इस दौरान कोई देश अपनी शक्ति बढ़ाने का प्रयत्न नही करेगा (iv) युद्ध विराम के दौरान सभी तरह की लड़ाईयाँ बंद रहेंगी (v) युद्ध विराम का अन्तिम लक्ष्य समूचे हिन्द चीन में संघर्ष का अंत होना चाहिए।

माई-ली-गांव

दक्षिणी वियतनाम में एक गांव था जहॉ के लोगो को वियतकांग समर्थक मान अमेरिकी सेना ने पूरे गांव को घेर कर पुरूषों को मार डाला, औरतों-बच्चियों को बंधक बनाकर कई दिनों तक सामुहिक बलात्कार किया, फिर उन्हें भी मार कर पूरे गांव में आग लगा दिया। लाशों के बीच दबा एक बुढ़ा जिन्दा बच गया था जिसने इस घटना को उजागर किया था।

परन्तु इस शांति प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया। अमेरिकी सेनाए पुनः बमबारी शुरू कर दी। लेकिन अमेरिका अब जान चुका था कि उसे अपनी सेनाए वापस बुलानी ही पड़ेगी। निक्सन ने पुनः आठ सुत्री योजना रखी। वियतनामियो ने इसे खारिज कर दिया। अब अमेरिका चीन को अपने पक्ष में करने में लग गया। 24 अक्टूबर 1972 को वियतकांग, उतरी वियतनाम, अमेरिका एवं दक्षिणी वियतनाम में समझौता तय हो गया, परन्तु दक्षिणी वियतनाम ने आपत्ति जताई और पुनः वार्त्ता के लिए आग्रह किया। वियतकांग ने इसे अस्वीकार कर दिया। इस बार इतने बम गिराए गए जिनकी कुल विध्वंसक शक्ति हिरोशिमा में प्रयुक्त परमाणु बम से ज्यादा आंकी गयी। हनोई भी इस बमवारी से ध्वस्त हो गया, लेकिन वियतनामी डटे रहे। अंततः 27 फरवरी 1973 को पेरिस में वियतनाम युद्ध के समाप्ती के समझौते पर हस्ताक्षर हो गया, समझौते की मुख्य बाते थीं युद्ध समाप्ति के 60 दिनो के अंदर अमेरिकी सेना वापस हो जाएगी, उतर और दक्षिण वियतनाम परस्पर सलाह कर के एकीकरण का मार्ग खोजेंगे, अमेरिका वियतनाम को असीमित आर्थिक सहायता देगा।

इस तरह से अमेरिका के साथ चला आ रहा युद्ध समाप्त हो गया एवं अप्रैल, 1975 में उत्तरी एवं दक्षिणी वियतनाम का एकीकरण हो गया।

© BSTBPC WBD COPY NOT TO BE PUBLISHED

इस प्रकार सात दशकों से ज्यादा चलने वाला यह अमेरिका वियतनाम युद्ध समाप्त हो गया। इस युद्ध में 9855 करोड़ डालर खर्च हुए। सर्वधिाक व्यय अमेरिका का था। उसके 56000 से अधिाक सैनिक मारे गए लगभग 3 लाख सैनिक घायल हुए। दक्षिणी वियतनाम के 18000 सैनिक मारे गए। अमेरिका के 4800 हेलिकाप्टर एव 3600 एवं अनगिनित टैंक नष्ट हो गए।

इन सारी घटनाओं में के परिपेक्ष में धन जन की बर्बादी के अलावे अमेरिकी शाख को भी गहरा आघात पहुँचा। पूरे हिन्दी चीन में वह बुरी तरह असफल रहा। अंततः उसे अपनी सेनाए हिन्दी चीन से हटानी पड़ी और सभी देशो की संप्रभुता एवं अखण्डता को स्वीकार करना पड़ा।

© BSTBPC
WEB COPY ,NOT TO BE PUBLISHED

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. हिन्द चीन क्षेत्र में कौन से देश आते हैं ?

   (अ) चीन, वियतनाम, लाओस

   (ब) हिन्द, चीन, वियतनाम लाओस

   (स) कम्बोडिया, वियतनाम, लाओस

   (द) कम्बोडिया, वियतनाम, चीन थाइलैण्ड

2. अंकोरवाट का मन्दिर कहाँ स्थित है ?

   (अ) वियतनाम (ब) थाइलैण्ड

   (स) लाओस (द) कम्बोडिया

3. हिन्द-चीन पहुँचने वाले प्रथम व्यापारी कौन थे ?

   अ) इंग्लैण्ड (ब) फ्रांसीसी

   (स) पुर्तगाली (द) डच

4. हिन्द-चीन में बसने वाले फ्रांसीसी कहे जाते थे ?

   (अ) फ्रांसीसी (ब) शासक वर्ग

   (स) कोलोन (द) जेनरल

5. नरोत्तम सिंहानुक कहाँ के शासक थे ?

   (अ) वियतनाम (ब) लाओस

   (स) थाइलैण्ड (द) कम्बोडिया

© BSTBPC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED

6. ''द हिस्ट्री ऑफ द लॉस ऑफ वियतनाम'' किसने लिखा

(अ) हो-ची-मिन्ह (ब) फान-वोई-चाऊ

(स) कुआंग (द) त्रियु

7. मार्च 1946 में फ्रांस एवं वियतनाम के बीच होने वाला समझौता किस नाम से जाना जाता है।

(अ) जेनेवा समझौता (ब) हनोई समझौता

(स) पेरिस समझौता (द) धर्म निरपेक्ष समझौता

8. किस प्रसिद्ध दार्शनिक ने एक अदालत लगाकर अमेरिका को वियतनाम युद्ध के लिए दोषी करार दिया ?

(अ) रसेल (ब) हो ची मिन्ह

(स) नरोत्तम सिंहानुक (द) रूसो

9. हिन्द-चीनी क्षेत्र में अंतिम युद्ध समाप्ति के समय में अमेरिकी राष्ट्रपति कौन थे?

(अ) वाशिगंटन (ब) निक्सन

(स) जार्ज बुस (द) रुजवेल्ट

10. होआ-होआ आन्दोलन किस प्रकृति का था?

(अ) क्रांतिकारी (ब) धार्मिक

(स) सम्राज्यवादी समर्थक (द) क्रांतिकारी धार्मिक

2. रिक्त स्थानों को भरें-

i. 12वीं शताब्दी में राजा सुर्य वर्मा द्वितीय ने ..... का निर्माण करवाया था।

ii. ..... समझौते ने पूरे वियतनाम को दो हिस्से में बाँट दिया।

iii. हो ची मिन्ह का दूसरा नाम ..... था।

vi. दिएन-विएन फु के युद्ध में ..... बुरी तरह हार गए।

v. अनामी दल का संस्थापक ..... था।

© BSTBPC WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(i) एक तरफा अनुबंध व्यवस्था क्या थी?

(ii) बाओदायी कौन था ?

(iii) हिन्द चीन का अर्थ क्या है?

(vi) जेनेवा समझौता कब और किनके बीच हुआ?

(v) होआ-होआ आन्दोलन की चर्चा करें ?

लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) हिन्द चीन में फ्रांसीसी प्रसार का वर्णन करें?

(ii) रासायनिक हथियारों एवं एजेन्ट ऑरेज का वर्णन करें?

(iii) हो-ची-मिन्ह के विषय में संक्षिप्त में लिखें?

(vi) हो-ची मिन्ह मार्ग क्या है, बतावें?

(v) अमेरिका हिन्द चीन में कैसे घुसा, चर्चा करें?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हिन्द चीन उपनिवेश स्थापना का उद्देश्य क्याा था?
2. माई ली गाँव की घटना क्या थी इसका क्या प्रभाव पड़ा?
3. राष्ट्रपति निक्सन के हिन्द चीन में शांति के संबंध में पाँच सुत्री योजना क्या थी? इसका क्या प्रभाव पड़ा?
4. फ्रांसीसी शोषण के साथ-साथ उसके द्वारा किये गये साकारात्मक कार्यों की समीक्षा करें?
5. हिन्द चीन में राष्ट्रवाद के विकास का वर्णन करें

वर्ग परिचर्चा

1. राष्ट्रवाद पर वर्ग में परिचर्चा करें?
2. हो ची मिन्ह मार्ग के संरचना बनावट और महत्व पर चर्चा करें।

© RSTDPC WEB COPY - NOT TO BE PUBLISHED